इकाई-III

11. जहाँ चाह वहाँ राह

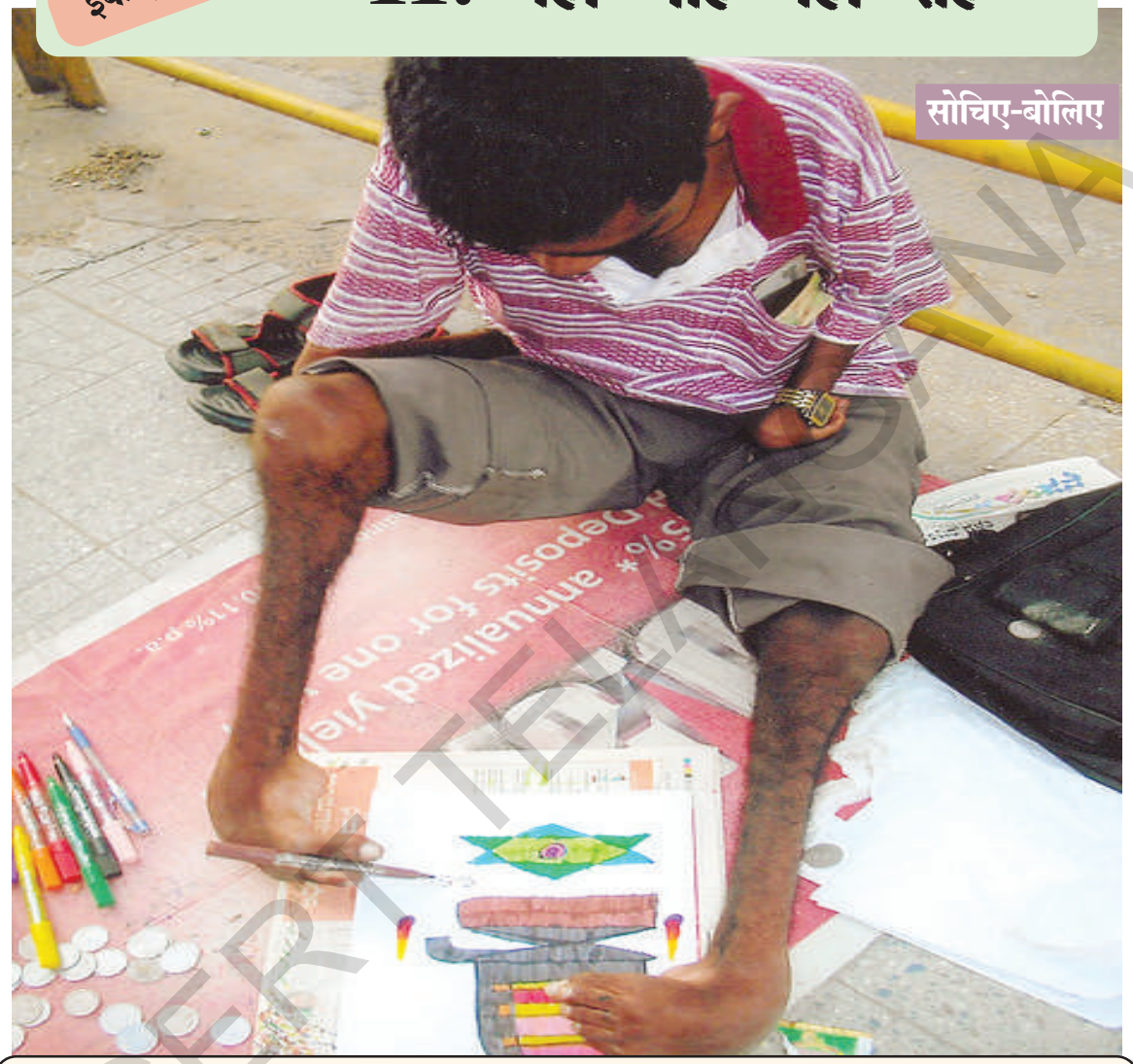

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. इस चित्र को देखकर आप क्या सोच रहे हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

मलमली धोती का बादामी रंग खिल उठा था। किनारों पर कसूती के टाँकों से पिरोयी हुई बेल थी। पल्लू पर भरवाँ टाँके अपना कमाल दिखा रहे थे। सुनहरे-रूपहले बेल-बूटों से जान आ गई थी मलमल में। इन बेल-बूटों को सजाया था इला सचानी ने। इला की हिम्मत की अनूठी मिसाल हैं ये कढ़ाई के नमूने।

छब्बीस साल की इला गुजरात के सूरत ज़िले में रहती हैं। उनका बचपन अमरेली ज़िले के राजाकोट गाँव में अपने नाना के यहाँ बीता।

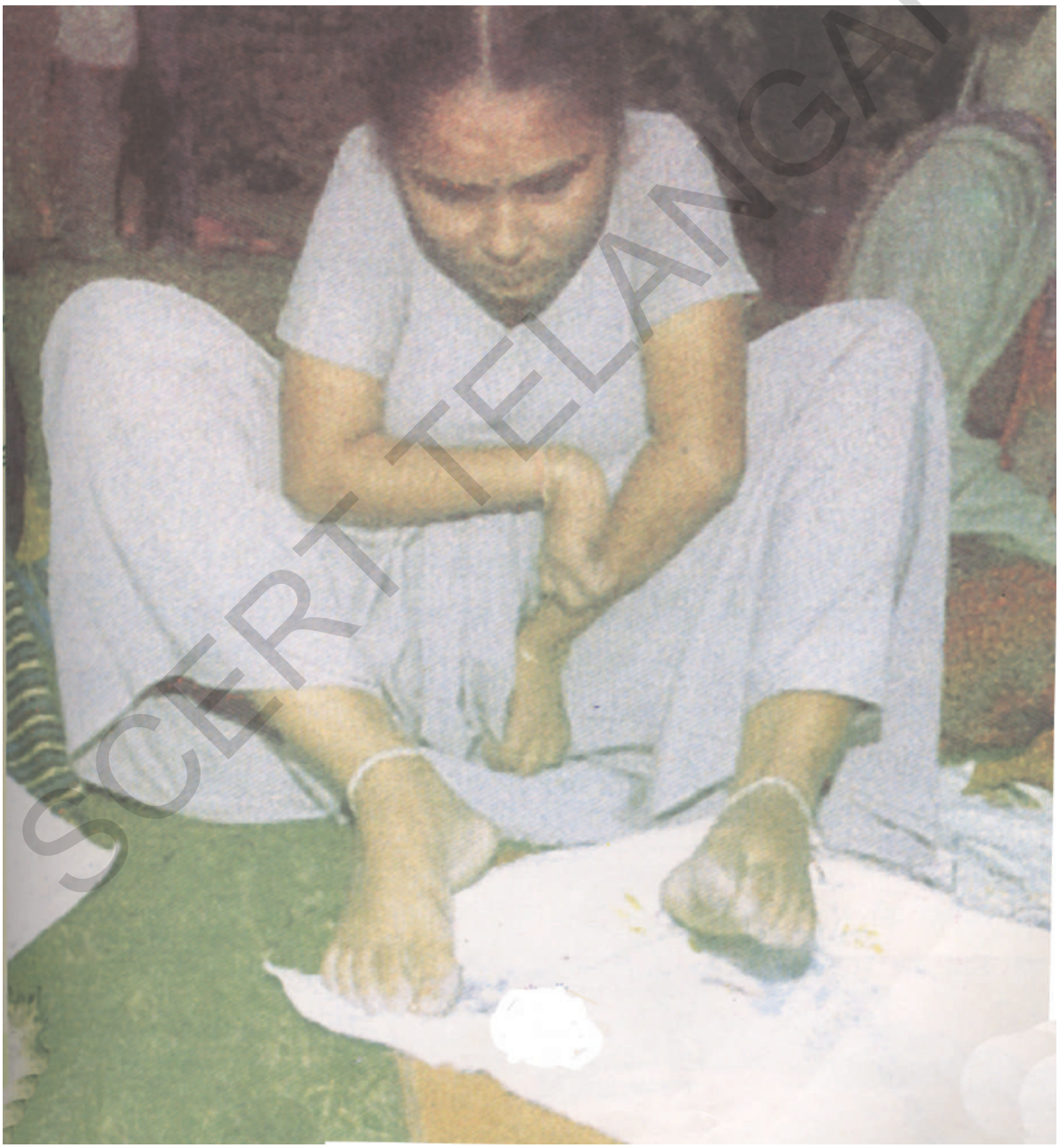

SCERT TELANGANA

साँझ होते ही मोहल्ले के बच्चे घरों से बाहर आ जाते। कुछ मिट्टी में आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते, कुछ कनेर के पत्तों से पिटपिटी बजाते, कुछ गिट्टे खेलते, कुछ इधर-उधर से टूटे-फूटे घड़ों के ठीकरे बटोरकर पिट्टू खेलते। जब इन खेलों से मन भर जाता तो पेड़ की डालियों पर झूला डालकर ऊँची-ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते -

कच्चे नीम की निंबौरी

सावन जल्दी अइयो रे!

इला गाने में तो उनका साथ देती, पर उनके साथ पेंगे नहीं ले पाती। रस्सी पकड़ने को हाथ बढ़ाती मगर हाथ तो उठते ही नहीं थे। वह चुपचाप एक किनारे बैठ जाती। मन-ही-मन सोचती, ''मैं भी ऐसा कुछ क्यों नहीं कर पाती हूँ। बच्चे भी चाहते कि इला किसी न किसी तरह तो उनके साथ खेल सके। कभी-कभार वह पकड़म-पकड़ाई और विष-अमृत के खेल में शामिल हो जाती। साथियों के साथ जमकर दौड़ती मगर जब 'धप्पा' करने की बारी आती तो फिर निराश हो जाती। हाथ ही नहीं उठेंगे तो धप्पा कैसे देगी? वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथों ने तो जैसे उसका साथ न देने का ठान रखी हो। इला ने अपने हाथों की इस जिद को एक चुनौती माना।

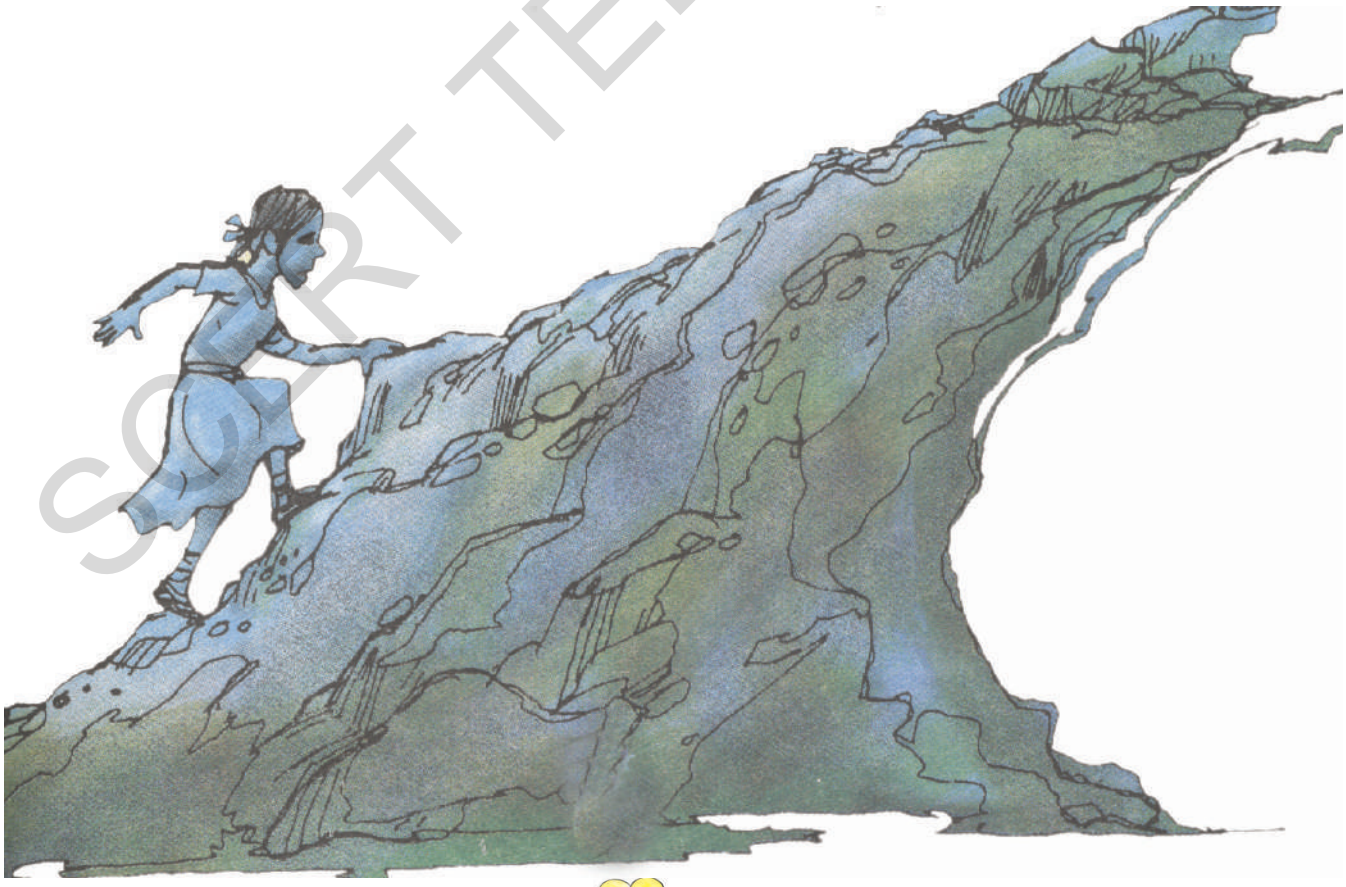

SCERT TELANGANA

उसने वह सब कुछ अपने पैरों से करना सीखा जो हम हाथों से करते हैं। दाल-भात खाना, दूसरों के बाल बनाना, फ़र्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना यहाँ तक कि तख्ती पर लिखना भी। उसने एक स्कूल में दाखिला ले लिया। दाखिला मिलने में भी उसे परेशानी हुई। कहीं तो उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता थी, कहीं उसके काम करने की गति को लेकर। किसी काम को तो वह इतनी फुर्ती से कर जाती कि देखने वाले दंग रह जाते। पर किसी-किसी काम में थोड़ी बहुत परेशानी तो आती ही थी। वह परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वह दसवीं परीक्षा पास नहीं कर पाई। इला को यह मालूम न था परीक्षा के लिए उसे अतिरिक्त समय नहीं मिल सकता है। उसे ऐसे व्यक्ति की सुविधा भी मिल सकती थी जो परीक्षा में उसके लिए लिखने का काम कर सके। यह जानकारी इला को समय रहते मिल जाती तो कितना अच्छा रहता। पर यहाँ आकर सब कुछ खत्म तो नहीं हो जाता न!

उसकी माँ और दादी कशीदाकारी करती थी। वह उन्हें सुई में रेशम पिरोने से लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। न जाने कब उसने कशीदाकारी करने की ठान ली। यहाँ भी उसने अपने पैर के अँगूठों का सहारा लिया। दोनों अँगूठों के बीच सुई थामकर कच्चा रेशम पिरोना कोई आसान काम नहीं था। पर कहते हैं न, जहाँ चाह वहाँ राह। उसके विश्वास और धैर्य ने कुदरत को भी झुठला दिया।

पंद्रह-सोलह साल की होते-होते इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। किस वस्त्र पर किस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन-से रंगों से नमूना खिल उठेगा और टाँके कौन-से लगें, यह सब वह समझ गई थी।

एक समय ऐसा भी आया जब उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की प्रदर्शनी लगी। इन परिधानों में काठियावाड़ के साथ-साथ लखनऊ और बंगाल भी झलक रहा था। इला ने काठियावाड़ी टाँकों के साथ-साथ और कई टाँके भी इस्तेमाल किए थे। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु-पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और जंजीर से उठा रखा था।

पारंपरिक डिज़ाइनों में यह नवीनता सभी को बहुत भाई।

इला के पाँव अब रुकते नहीं हैं। आँखों में चमक, होंठों पर मुस्कान और अनूठा विश्वास लिए वह सुनहरी रूपहली बूटियाँ उकेरते थकती नहीं हैं।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. इला या इला जैसी कोई लड़की यदि आपकी कक्षा में दाखिला ले ले तो आप के मन में कौन-कौन से प्रश्न उठेंगे? बोलिए।
2. इस लेख को पढ़ने के बाद क्या आपकी सोच में कुछ बदलाव आया है? यदि आया है तो कैसा बदलाव आया है? बताइए?
3. यदि इला जैसी कोई लड़की आपके विद्यालय में आ जायेगी तो उसे किन-किन कार्यों को करने में परेशानी आएगी?

पढ़िए

I. सही वाक्य के आगे (✔) का निशान लगाइए।

इला दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर सकी क्योंकि .....

- ० परीक्षा के लिए उसने अच्छी तरह तैयारी नहीं की थी।
- ० वह परीक्षा पास करना नहीं चाहती थी?
- ० लिखने की गति धीमी होने के कारण वह प्रश्न पत्र पूरा नहीं कर पाती थी।

II. बच्चे पेड़ की डालियों पर झूला झूलकर ऊँची-ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते थे, वे क्या गाते थे -

III. पाठ पढ़िए और निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. इला की कशीदाकारी में खास बात क्या थी?
2. इला ने वह सब अपने पैरों से करना सीखा था जो हम हाथों से करते हैं। वे सभी काम क्या हैं? बताइए और लिखिए।

लिखिए

1. इला को लेकर स्कूल वाले चिंतित क्यों थे? क्या उनका चिंता करना सही था? अपने उत्तर के कारण लिखिए।
2. अगर उसके आस-पास के लोग उसके लिए सभी काम कर देते और उसको कुछ

SCERT TELANGANA

करने का मौका नहीं देते, तो क्या इला पैर के अँगूठे से काम करना सीख पाती? नहीं, तो फिर वह क्या करती।

3. इला परेशानियों के आगे घुटने टेकने वाली नहीं थी। इस वाक्य से आप क्या समझते हैं?

शब्द भंडार

1. इस पाठ में सिलाई-कढ़ाई से संबंधित कई शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाइए। अब देखिए कि इस पाठ को पढ़कर आपने कितने नए शब्द सीखे हैं।

2. ''कभी-कभार वह 'विष-अमृत' के खेल में शामिल हो जाती।'' उपर्युक्त पंक्ति में एक दूसरे का विपरीतार्थक शब्द आया है। उसे पहचान कर लिखिए।

● ऐसे ही विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग करते हुए कम-से-कम पाँच वाक्य बनाइए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. छब्बीस साल की इला अब समझिए 30-35 साल की हो गई है। वह सफलता की कितनी सीढ़ियाँ चढ़ चुकी होगी? बताइए और कहानी को आगे बढ़ाइए।

प्रशंसा

पैरा-ओलंपिक खेल ओलंपिक खेलों का ही एक भाग है, जो कुदरत को चुनौती मानकर प्रतिभा दिखानेवाले खिलाड़ियों के लिए होते हैं। सितंबर 2012 के लंदन पैरा-ओलंपिक खेलों में कर्नाटक के 24 वर्षीय गिरीश ने पुरुषों की 1.74 मीटर की ऊँचाई को लाँघकर हाई जंप में रजत-पदक जीत लिया। श्री गिरीश की प्रशंसा करते हुए पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

I. (क) इन खेलों से <u>मन भर जाता</u> था।

(ख) वह परेशानियों के आगे <u>घुटने टेकने वाली</u> नहीं थी। मन और घुटने शरीर के अंग

SCERT TELANGANA

हैं। शरीर के अंगों से संबंधित तीन और मुहावरे लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

परियोजना कार्य

एक सादा रूमाल कपड़ा काटकर बनाइए । उस पर नीचे दिए गए टाँकों में से किसी एक टाँके का इस्तेमाल करते हुए बड़ों की मदद से कढ़ाई कीजिए।

जंजीर

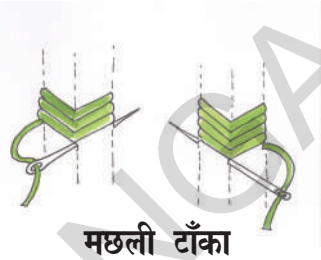

मछली टाँका

भरवाँ टाँका

उल्टी बखिया

ये काम कक्षा के लड़के-लड़कियाँ सब करें।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर छोटा लेख लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA